बहुलवाद – PLURALISM

अवधारणा, विशेषताएं, सिद्धान्त एवं सिद्धान्तकार

CONCEPT, FEATURES, THEORIES AND THEORISTS.

DR SHAKEEL HUSAIN

HEAD DEPT OF POLITICAL SCIENCE

GOVT VYT PG AUTONOMOUS COLLEGE

GRADED A+ BY NAAC DURG

CHHATISGARH

बहुलवाद के जनक

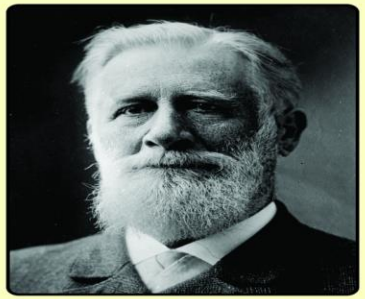

O.V. Geirkey

F.W. Maitland

PROMINENT PLURALIST

1. K.C. HASSIO	- Political Pluralism
2. J.D. MOBBETT	- the State and the citizen
3. J.M. FIGGIS	- Churches in the middle ages.
4. O.V. GEIRKAY	- Political theory of middle age.
5. LINDSAY	- State in political theory.
6. KRABBE	- The modern idea of State.
7. M.T. FOLLETT	- the New State.
8. F.W. MAITLAND	- Political Theory in middle ages
9. H.J. LASKI	- The Pluralist.
10. MCIVER	- Modern State.

बहुलवाद के प्रमुख कथन

1. लास्की – समाज संघात्मक है अतः सत्ता भी संघात्मक होनी चाहिये।
2. लिण्डर्स – राज्य संघो का संघ है।
3. क्रैब – राज्य एक वैधानिक समुदाय से अधिक कुछ नही है।
4. फिग्गिस – सम्प्रभुता एक सुविचार से अधिक कुछ नही है।
5. मैकाइवर – असीमित सम्प्रभुता की धारणा एक खतरनाक झूठ है।
6. लास्की – मुझपर किसी सत्ता का दबाव उन्ही सीमा तक उचित है जिस सीमातक वह नैतिक रूप से मान्य है।

बहुलवाद को सामान्य तौर पर सम्प्रभुता कीएकलवादीअवधारणाके विरूद्ध एक प्रतिक्रिया माना जाता है । सम्प्रभुता की एकलवादी अवधारणा यह मानती है कि सम्प्रभुता न सिर्फ राज्य का अनिवार्य तत्व है बल्कि यह राज्य की वह सर्वोच्च शक्ति है जो एक निश्चित मानव श्रेष्ठ मे निवास करती है । **जीनबोंदा , थामस हाब्स और जान आस्टिन** सम्प्रभुता के एकलवादी सिद्धान्त के प्रमुख प्रवक्ता है । आस्टिन नें इसके कानूनी पक्ष पर अधिक बल दिया ।

1. जर्मन दार्शनिक **ओट्टो वेर गीर्के** तथा अंग्रेज इतिहासकार **एफ डब्लयू मेटलैण्ड** को बहुलवाद का जनक माना जाता है ।
2. इनकी मान्यता है कि सम्प्रभुता का सिद्धान्त 15 वी 16 वी सदी की राजनीतिक परिस्थितियो का परिणाम था । विशेषकर योरोपिय गृहयुद्ध और राष्ट्रराज्य के विकास का परिणाम थी । निरंकुश राजतंत्रो के जमाने मे यह ठीक था लेकिन 20वी सदी मे जब लोकतंत्र लोकप्रिय हो चुका है , तथा बहुल भाषाएं एवं बहुल संस्कृतियो को मान्यता राज्य देता है ऐसे मे सम्प्रभुता पर अब , मतदाता , समाज, समुदाय, धर्म, भाषा, संस्कृति आदि का दबाव व प्रतिबन्ध रहता है । अतः समाज मे सत्ता विभाजित रहती है । जैसाकि प्रमुख बहुलवादी **हैराल्ड लास्की** कहते है **"समाज संघात्मक है। अतः सत्ता संघात्मक होनी चाहिए ।"**

1. **गीर्के** ने अपनी पुस्तक **पोलिटिकल थियोरी आफ मिडिल एजेज** मे मध्ययुग का उदाहरण देकर बताया कि उस समय विद्यमान संघ स्वायत्त और आत्मनिर्भर थे । उन्हे राज्य की निरंकुशता की जरूरत नही थी , बल्कि ये संगीर्केघ राज्य की निरंकुशता पर प्रतिबंध थे । राज्य को इन संघो की स्वायत्ता का सम्मान करना पड़ता था ।

2. इसप्रकार बहुलवाद सम्प्रभुताविहीन राज्य का समर्थक है ।
3. बहुलवाद के अनुसार समाज राज्य से अधिक प्राचीन है अतः राज्य को सामाजिक सत्ता का आदर करना चाहिए । समाज और राज्य मे भेद स्पष्ट है ।
4. समाज और समाज मे स्थित विभिन्न संघो का अपना पृथक व्यक्तित्व होता है । तथा राज्य भी विन्न सेघो की भांति एक संघ है ।
5. व्यक्तियों की आवश्यकता पूर्ण करने मे समाज सहित सभी संघो की महत्वपूर्ण भूमिका है । अतः राज्य सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ नही है ।

GIERKEY & METLAND
गीर्के एवं मेटलैण्ड
POLITICAL THEORY OF MIDLE AGES .

- Fedrations and associations has important role in law making and implementation.
- State can not demand obediency because it is the source of law .
- Function of state is to cordinate different groups and associations rather than supermacy.
- राज्य अन्य संघो की भांति एक संघ है और उसे विधि निर्माता होने के कारण आज्ञाकारिता की अपेक्षा नही रखनी चाहिए । संघो की विधिनिर्माण और क्रियान्वयन मे महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।
- राज्य का कार्य विभिन्न वर्गो और संघो मे समन्वय बनाना है न कि आदेश देना, नियंत्रण करना और आज्ञाकारिता की अपेक्षा करना ।

K C HASIO के सी हैसियो

POLITICAL PLURALISM

- राज्य का कार्यक्षेत्र संकुचित होना चाहिए ।
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता अनिवार्य है तथा इसपर राज्य का अनावश्यक नियंत्रण अनुचित है ।
- संघो और सामाजिक संगठनो का महत्व है तथा राज्य से ये सीमित नही है ।
- बहुलवाद राज्य के पितृसत्तावादी स्वरूप और निरंकुशतावाद के विरूद्ध प्रतिक्रिया है ।
- बहुलवाद स्वयंभू एकलवाद के विरूध्द है ।
- राज्य को विधिक सत्ता (राज्य) और नैतिक सत्ता (संघ , समुदाय) मे संतुलन बनाकर रखना चाहिए ।

J M FIGGIS जे एम फिग्गीस

CHURCHES IN THE MIDLE AGES

- फिग्गीस ने मध्ययुग मे चर्चो की स्वायत्ता के उदाहरण से बहुलवाद का समर्थन किया ।
- इनके अनुसार चर्च जैसे धार्मिक संगठन राज्य से बहुत अधिक प्रचीन है और समाज मे नैतिक मूल्यो की स्थापना का प्रमुख आधार है , राज्य को इनपर अनावश्यक नियंत्रण करने का अधिकार नही है ।
- “ राज्य केवल व्यक्तियो का ढेर नही है , जो राज्य के माध्यम से जुड़े हो , बल्कि यह समूहों की सोपानिक व्यवस्था है । “
- सम्प्रभुता का पारम्परिक सिद्धान्त एक आदरणीय अंध विश्वास मात्र है ।

LEON DUGVI लियोन डुग्वी

- विधि के प्रोफेसर थे । इनके अनुसार Law is superior, independent, and anterior to political organisation – विधि , राजनीतिक संगठन से प्राचीन, स्वतंत्र और उच्च है ।
- विधियो का स्रोत वो राज्य को नही बल्कि सामाजिक सुदृढ़ताओं को मानते है जो कि समाज की सामान्य सर्वमान्य आवश्यकताओं से बनतीं है ।
- सामाजिक सुदृढ़ताएं शाश्वत होतीं हैं ।
- **लिण्ड्से- LINDSEY** -- State is association of association . राज्य संघो का संघ है ।
- राज्य सदस्यता अनिवार्य है लेकिन संघो पर श्रेष्ठता और आज्ञाकारिता का आधार नही है ।

KRABB क्रैब

MODERN IDEA OF STATE

- डुग्वी की ही तरह केवल विधि को ही सम्प्रभु मानते है ।
- विधि राज्य से उच्चतर और स्वतंत्र है ।
- क्रैब के अनुसार विधियों का स्रोत सामुदायिक विवेक है । यह समुदाय की सामान्य बुद्धिमता एवं विवेक का उत्पाद है
- डुग्वी से अलग ये विधि को objective वस्तुनिष्ठ न मानकर subjective विषयनिष्ठ मानते है । क्योकि यह स्वतंत्र तो है लेकिन यह सामुदायिक विवेक के सापेक्ष है ।
- राज्य एक विधिक समुदाय है State is nothing but a legal community .
- क्रैब ने विधि की सम्प्रभुता को अन्तर्राषट्रीय राजनीति पर भी लागू किया ।

BARKER , LASKI AND MCIVER

- **बार्कर** ने गीर्के की इस धारणा को अस्वीकार कर दिया कि संघों का वास्तविक व्यक्तित्व होता है ।
- बार्कर यह जरूर मानते है कि संघों का अस्तित्व राज्य से अधिक प्राचीन और पहले है ।
- राज्य अन्य संघो को कानूनी शक्ती प्रदान कर नियंत्रित कर सकता है लेकिन राज्य संघो का सम्प्रभु नही है ।
- **लास्की** ने Problems of Sovereignty नामक पुस्तक मे स्मप्रभुता पर प्रबल प्रहार किए ।
- लास्की का विचार है कि सम्प्रभुता सिद्धान्त राज्यो की वास्विक कानूनी स्थिति को प्रकट नही करता ।
- राज्य के बारे मे आस्टिन की तुलना मे माण्टेस्यू , डुग्वी और क्रैब का विश्लेषण अधिक महत्वपूर्ण है ।
- **मैकाइवर** के अनुसार " असीमित सम्प्रभुता का सिद्धान्त एक खतरनाक झूठ है "
- राज्य का कार्य है सामाजिक संस्थाओ और समून्धो मे एकता कायम रखना न कि उनपर शासन करना ।

GDH KOLE , ROBERT DAHL PAUL BANCOUR DURKHEIM

- **कोल** जैसे श्रेणी समाजवादी के अनुसार समाज का स्तरण उत्पादको और उपभोक्ताओ के रूप मे होना चाहिए ।
- उत्पादको और उपभोक्ताओ के राष्ष्ट्रीय संघो को प्रशासनिक और विधायी अधिकार प्राप्त होने चाहिए ।
- संसद मे दोनो का प्रतिनिधित्व होना चाहिए । सम्प्रभुता दोनो मे विभाजित होनी चाहिए ।
- न्याय पालिका का कार्य इसमे संतुलन बनाए रखना चाहिए ।
- **पाल बैंकूर तथा ईमाइल दुर्खीम** जैसे फ्रेच समाजशास्त्री व्यवसायिक संघों commercial guilds की स्वयत्ता का समर्थन करतें हैं । ये व्यावसायिक संघो मे सम्प्रभुता को विभाजित मानते है । राज्य की भूमिका संघो के प्रति समन्वयकारी होनी चाहिए , आदेशात्मक और नियंत्रण कारी नही ।
- **राबर्ट डहल** ने दबाव समूहो की राजनीति के अध्ययन से बताया कि अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश मे दबाव समूहो के ही हाथ मे वास्तविक सत्ता होती है । अतः राज्य सम्प्रभु नही है ।

ASSIGNMENT
गृह कार्य

- बहुलवाद के जनक का नाम लिखिए । write the name of the founders of pluralism
- बहुलवाद की प्रमुख विशेषताएं बताइए write the features of pluralism.
- बहुलवाद पर गीर्के और मेटलैण्ड के विचार लिखिए ।
- क्रैब की पुस्तक का नाम लिखिए ।
- लास्की के विचार 50 शब्दो मे लिखिए ।
- डुग्वी के विचार 50 शब्दो मे लिखिए ।